पाठ - 3
सीना चीरे जाने की घटना

الدرس الثالث - هندي
شق الصدر

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलाह वसल्लम अभा चार साल के हुए थे। आप एक दिन अपन रज़ाइ भाइ (हलामा क बेटे) के साथ खेमों पर खेल रहे थे कि हलीमा का बेटा दौड़ता हुआ आया। उसके चेहरे पर भय की अलामतें नज़र आ रही थीं, उसने अपनी मां से अपने क़ुरैशी भाई को तलाश करने को कहा। हलीमा ने पूरी घटना के बारे में सवाल किया तो उसने बताया : ''मैंने दो लोगों को सफेद कपड़ों में देखा, उन्होंने हमारे क़ुरैशी भाई को हम लोगों के बीच से पकड़ा और लिटाकर उसका सीना चाक किया, इस से पहले कि वे अपनी बात पूरी कर पाते, हलीमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ दौड़ीं। उन्होंने देखा कि आप खड़े थे और हरकत नहीं कर रहे थे। आपका चेहरा ज़र्द हो रहा था और रंग उड़ा हुआ था। हलीमा ने आप के साथ पेश आई घटना के बारे में पूछा तो आपने बताया कि सब कुछ ठीक है और बताया कि आपके पास सफ़ेद कपड़े पहने हुए दो लोग आए और उन्होंने पकड़ कर आप का सीना चाक कर दिया। आपके दिल को निकाला और उसके सियाह धब्बे को निकाल कर फेंक दिया और दिल को ठंडे पानी से धोया और फिर उसे पेट में रख दिया। इसके बाद आपके सीने पर हाथ फेरा, फिर वे लोग चले गए और ग़ायब हो गए

हलीमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खेमे में लायीं और दूसरे दिन सुबह सवेरे ही उनको लेकर आपकी मां की सेवा में जा पहुंचीं उन्हें उस समय देखकर आमिना को बड़ी हैरत हुई क्योंकि हलीमा बच्चे को अपने पास रखने की इच्छुक थीं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मां ने इस की वजह मालूम की तो उन्होंने शक़्क़े सदर की पूरी घटना बयान कर दी। आमिना अपने यतीम बच्चे को लेकर क़बीला बनू नज्जार के अपने भाइयों से मुलाक़ात के लिए मदीना चली गयीं वापसी की राह में अबवा नामक स्थान पर उनका इन्तिक़ाल हो गया और वहीं दफ़न कर दी गयीं।

6 साल की उम्र में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िम्मेदारी आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने संभाली और आपको बड़े प्यार व मुहब्बत से रखा। लेकिन जब आप आठ साल के हुए तो आपके दादा भी वफ़ात कर गए तो उनके बाद चचा अबू तालिब ने अधिक संतान होने और माल व दौलत की कमी के बावजूद आपकी किफ़ालत की ज़िम्मेदारी संभाली। उन्होंने और उनकी पत्नी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपने बेटे जैसा सुलूक किया। यही वजह है कि यह यतीम अपने चचा जान से बड़ी हद तक घुल मिल गया था। इसी माहौल में आप की पहली तर्बियत शुरु हुई और सच्चाई और अमानतदारी पर आपका लालन पालन हुआ यहां तक कि ये दोनों ख़ूबियां आपका लक़ब हो गयीं। जब कहा जाता कि ''अमीन आ गए या ''सादिक आ गए तो इससे लोग समझ जाते कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ बड़े हुए तो अपने जीवन के मामले और खाने कमाने के तअल्लुक़ से स्वयं अपने आप पर भरोसा करने लगे और थोड़े माल के बदले क़ुरैशियों की बकरियां चराने का काम भी किया।

खदीजा रजियल्लाहु अन्हा से शादी : मुल्क शाम का सफ़र करने वाले एक तिजारती क़ाफिले में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्कत की थी। इसमें खदीजा रजियल्लाहु अन्हाका बहुत ज़्यादा माल लगा हुआ था। खदीजा बहुत ही मालदार विधवा औरत थीं। इस तिजारती क़ाफिले में खदीजा के माल के वकील और दूसरे कामों का ज़िम्मेदार उनका सेवक मैसरा था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत और इमानदारी की वजह से तिजारत में बहुत अधिक लाभ हुआ। इस तरह का लाभ इससे पहले कभी नहीं हुआ था। खदीजा ने अपने सेवक मैसरा से इतने ज्यादा लाभ के बारे में पूछा तो उसने बताया कि सामान दिखाने और बेचने की ज़िम्मेदारी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने अपने सर ली, जिसे देखकर बड़ी तादाद में लोग उनके पास आए तो इस तरह से जुल्म के बिना बहुत अधिक लाभ हासिल हुआ।

खदीजा ने मैसरा की बातों को ध्यान से सुना। वे मुहम्मद के बारे मे पहले से कुछ जानती भी थीं लेकिन यह बात सुन कर उनकी पसन्दीदगी में इज़ाफ़ा हो गया। उसी समय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी करने की इच्छा उनके दिल में पैदा हुई। उन्होंने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार को सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भेजा ताकि इस बारे में आपकी राय से उन्हें आगाह करें। उस समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 25 साल थी। अतः उस औरत खदीजा की तरफ़ से शादी का पैग़ाम रखा, जिसे आप ने स्वीकार कर लिया। इस तरह यह शादी हो गयी और इनमें से हरेक दूसरे को पाकर खुश हुए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खदीजा की दौलत की देखभाल की ज़िम्मदारी संभाल ली। आपने इस मैदान में अपनी सूझ बूझ और योग्यता साबित कर दी। इस तरह कई साल गुज़र गए। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खदीजा के कई औलाद हुई। लड़कियों में ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हार्थी और लड़कों में क़ासिम और अब्दुल्लाह थे जो कम उम्र ही में वफ़ात पा गए।